

मोहन राकेश की कहानी 'मलबे का मालिक' में चित्रित विभाजन का दर्द

डॉ. श्रीमाया सी.

सह प्राध्यापक, हिन्दी विभाग

पय्यन्नूर कॉलेज, पय्यन्नूर केरला - 670327

ईमेल : sreemaya2012@gmail.com मो : 9495868174

सारांश--मोहन राकेश की कहानी 'मलबे का मालिक' (1950 के दशक की नई कहानी आंदोलन की प्रमुख रचना) भारत-पाकिस्तान विभाजन (1947) की त्रासदी को एक सूक्ष्म, मानवीय और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से चित्रित करती है। विभाजन के 'दर्द' को कहानी के माध्यम से विश्लेषित करता है – घर-बार का नुकसान, परिवार की हत्या, पड़ोसी की विश्वासघात, स्मृति का बोझ, साम्प्रदायिक हिंसा, लालच और अंततः मानवीय मूल्यों का पतन। गनी मियाँ और रक्खे पहलवान के चरित्र के माध्यम से लेखक दिखाते हैं कि भौगोलिक विभाजन के साथ मानसिक और नैतिक विभाजन भी हुआ था।

बीज शब्द-- विभाजन साहित्य, मोहन राकेश, मलबे का मालिक, विभाजन का दर्द, साम्प्रदायिक हिंसा, विश्वासघात, स्मृति का बोझ, पंजाब विभाजन, नई कहानी आंदोलन, मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद, मलबा (प्रतीक), क्षमा और अपराधबोध, हिंद-मुस्लिम संबंध, 1947, मानवीय संवेदना।

प्रस्तावना--विभाजन भारतीय उपमहाद्वीप की सबसे बड़ी मानवीय त्रासदी थी। 1947 में भारत और पाकिस्तान के बंटवारे ने लाखों लोगों को घर-बार, परिवार और पहचान से वंचित कर दिया। हिंसा, बलात्कार, लूट और आगजनी ने सामान्य जीवन को नरक बना दिया। इस त्रासदी को हिंदी साहित्य में भीष्म साहनी ('तमस'), ख्वाजा अहमद अब्बास, राजेंद्र सिंह बेदी, कृष्णा सोबती और मोहन राकेश ने गहराई से चित्रित किया है। मोहन राकेश 'नई कहानी' आंदोलन के प्रमुख हस्ताक्षर थे। उनकी कहानियाँ व्यक्ति-केन्द्रित हैं, लेकिन सामाजिक-राजनीतिक संदर्भ में गहरी अंतर्दृष्टि रखती हैं। 'मलबे का मालिक' उनकी सर्वश्रेष्ठ विभाजन-कहानियों में से एक है। यह कहानी साढ़े सात साल बाद (1955 के आसपास) लाहौर से अमृतसर आए मुसलमानों के माध्यम से विभाजन के दीर्घकालिक दर्द को उजागर करती है।

कहानी का शीर्षक ही प्रतीकात्मक है – 'मलबा' यह जलकर राख हुए मकान का, और टूटे हुए मानवीय संबंधों, विश्वास और मूल्यों का प्रतीक है। कहानी में चित्रित विभाजन के दर्द को चार आयामों में विश्लेषित किया गया है – भौतिक नुकसान, भावनात्मक आघात, नैतिक पतन और स्मृति का बोझ।

राकेश 'नई कहानी' के सिद्धांतकार थे – वे यथार्थवाद, मनोविश्लेषण और आधुनिक संवेदना पर जोर देते थे। उनके प्रमुख नाटक – 'आषाढ़ का एक दिन', 'आधे अधूरे', 'लहरों के राजहंस' – मध्यवर्गीय कुंठाओं और अस्तित्व-संघर्ष को चित्रित करते हैं। कहानी-संग्रहों में 'इंसान के खंडहर', 'नये बादल',

'फौलाद का आकाश' प्रमुख हैं। विभाजन ने राकेश को गहराई से प्रभावित किया क्योंकि वे अमृतसर (सीमा क्षेत्र) के रहने वाले थे। 'मलबे का मालिक' में वे विभाजन को 'राजनीतिक घटना' के साथ 'मानवीय त्रासदी' के रूप में देखते हैं।

विभाजन का ऐतिहासिक संदर्भ-1947 का विभाजन दो-राष्ट्र सिद्धांत (जिन्ना) और ब्रिटिश 'फूट डालो और राज करो' नीति का परिणाम था। 10-15 लाख लोग मारे गए, 1.5 करोड़ विस्थापित हुए। पंजाब सबसे प्रभावित क्षेत्र था। अमृतसर-लाहौर सीमा क्षेत्र में हिंसा चरम पर थी। राकेश इस ऐतिहासिक घटना को व्यक्तिगत स्तर पर चित्रित करते हैं। कहानी 1955 के संदर्भ में है – जब लोग 'साढ़े सात साल' बाद वापस आ रहे थे। यह 'दीर्घकालिक दर्द' दिखाती है।

कहानी का सारांश--'मलबे का मालिक' मोहन राकेश की प्रसिद्ध कहानी है जो 1947 के भारत-पाकिस्तान विभाजन की त्रासदी को साढ़े सात साल बाद के संदर्भ में चित्रित करती है। लाहौर से कुछ मुसलमान अमृतसर आए हैं। इनमें अब्दुल गनी मियाँ भी हैं, जिनका परिवार बाजार बांसां की गली में रहता था। विभाजन के समय उनके बेटे चिरागदीन, बहू जुबैदा और दोनों बेटियों किश्वर व सुल्ताना को उनके ही हिंदू पड़ोसी रक्खे पहलवान ने मकान हड़पने के लिए क्रूरता से मार डाला था। गनी मियाँ पुराने मकान को देखने आते हैं, लेकिन वहाँ अब सिर्फ मलबे का ढेर बचा है। वे मलबे पर बैठकर रोते हैं, लेकिन रक्खे पहलवान से कोई शिकायत नहीं करते। उल्टा वे रक्खे को "भाई" कहकर गले लगाते हुए क्षमा का भाव दिखाते हैं। रक्खे पहलवान के मन में अपराधबोध जागता है, लेकिन वह इसे दबाने की कोशिश करता है। कहानी अंत में एक कुत्ते के भौंकने से समाप्त होती है, जो रक्खे के विवेक को जगाने का प्रतीक है। इस कहानी के कथन जो विभाजन के दर्द, विश्वासघात, स्मृति और मानवीय संवेदना को सबसे गहराई से व्यक्त करते हैं: – "सब कुछ बदल गया, मगर बोलियाँ नहीं बदलीं!" "रोएगा तो तुझे वह मुसलमान पकड़कर ले जाएगा, मैं वारी जाऊँ, चुप कर!" "मलबा उसका कैसे है? मलबा हमारा है!" "मेरा चिराग साथ होता, तो और बात थी... रक्खे, मुझे तेरा बहुत भरोसा था।" "खुदा नेक की नेकी रखे और बद की बदी माफ़ करे!" "जो होना था, सो हो गई। उसे कोई लौटा थोड़े ही सकता है?" कहानी विभाजन के भौतिक, भावनात्मक और नैतिक नुकसान को एक छोटी-सी गली और दो परिवारों के माध्यम से बहुत सूक्ष्मता से दिखाती है।

विभाजन की त्रासदी का चित्रण और कहानी की प्रासंगिकता- मोहन राकेश ने 'मलबे का मालिक' में विभाजन की त्रासदी को व्यक्तिगत और मनोवैज्ञानिक स्तर पर चित्रित किया है। वे इसे सिर्फ राजनीतिक घटना नहीं, बल्कि मानवीय संबंधों के टूटने की कहानी बनाते हैं।

विभाजन की त्रासदी कैसे चित्रित की गई है?

भौतिक विनाश: "मलबा" शब्द पूरे घर, परिवार और स्मृतियों के नष्ट होने का प्रतीक है। नई इमारतों के बीच-बीच में बिखरे मलबे का ढेर विभाजन के बाद के खोखलेपन को दिखाता है।

पड़ोसी का विश्वासघात: रक्खे पहलवान (जिसे गनी "भाई" समझता था) का चिरागदीन परिवार को मारना विभाजन की सबसे कटु सच्चाई है – साम्प्रदायिक हिंसा में सबसे करीबी लोग एक-दूसरे के दुश्मन बन जाते हैं।

नई पीढ़ी में पैदा हुआ भय: लड़की का वाक्य "रोएगा तो तुझे वह मुसलमान पकड़कर ले जाएगा" दिखाता है कि विभाजन ने बच्चों के मन में भी घृणा और डर बो दिया।

क्षमा और अपराधबोध: गनी मियाँ की उदारता ("खुदा नेक की नेकी रखे...") और रक्खे का चुप रहना विभाजन के बाद बचे अपराधबोध को उजागर करता है।

प्रतीकात्मक अंत: कुत्ते का भौकना – यह विवेक और अंतर्मन की आवाज़ है जो अपराधी को चुप नहीं रहने देती।

कहानी की प्रासंगिकता- आज भी यह कहानी बेहद प्रासंगिक है क्योंकि:

साम्प्रदायिकता और घृणा की राजनीति अभी भी जारी है। सीमा-विभाजन, विस्थापन और परिवारों के टूटने की घटनाएँ (जैसे कश्मीर, उत्तर-पूर्व आदि) आज भी हो रही हैं। कहानी सिखाती है कि विभाजन केवल 1947 की घटना नहीं, बल्कि मानसिक विभाजन है जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलता रहता है।

यह मानवीय क्षमा और सह-अस्तित्व का संदेश देती है, जो आज के विभाजित समाज के लिए बहुत जरूरी है।

कहानी में चित्रित विभाजन का दर्द :-

भौतिक नुकसान और घर का दर्द- 'मलबा' शब्द कहानी का केंद्र है। बाजार बांसां की आग में मुसलमानों के साथ हिंदुओं के घर भी जल गए। गनी का घर अब मलबे का ढेर है। लेखक लिखते हैं – "नई इमारतों के बीच-बीच में मलबे के ढेर अजीब ही वातावरण प्रस्तुत करते थे।" यह दर्द 'घर' की हानि का है – न केवल ईंट-पत्थर, बल्कि स्मृतियों का।

परिवार और अपनों का खोना- गनी का पूरा परिवार (चिरागदीन, जुबैदा, किश्वर, सुल्ताना) रक्खे ने मार डाला। यह 'पड़ोसी का विश्वासघात' विभाजन का सबसे कटु दर्द है। गनी रक्खे को "भाई" कहकर गले लगाते हैं। यह माफी और क्षमा का दर्द है।

साम्प्रदायिक हिंसा और लालच-रक्खे पहलवान साम्प्रदायिकता की आड़ में लालच पूरा करता है। लेखक

दिखाते हैं कि विभाजन ने 'स्वार्थ' को उजागर किया। बच्ची का डर – "रोएगा तो वह मुसलमान पकड़ ले जाएगा" – नई पीढ़ी में पैदा हुआ साम्प्रदायिक भय दर्शाता है।

स्मृति और मनोवैज्ञानिक आघात-लाहौरवासी अमृतसर की पुरानी गलियों को याद करते हैं। गनी बच्चे को "चिज्जी" देने जाते हैं, लेकिन बच्ची उसे "मुसलमान" कहकर डराती है। यह 'अजनबी' बन जाने का दर्द है।

प्रतीकात्मकता-

मलबा : टूटे संबंधों का प्रतीक।

कत्ता : विवेक/अपराधबोध का प्रतीक (अंत में रक्खे पर भौकता है)।

बोली : "सब कुछ बदल गया, मगर बोलियाँ नहीं बदलीं" – सांस्कृतिक निरंतरता का प्रतीक, लेकिन दर्द भरा।

चरित्र-चित्रण-

गनी मियाँ : माफी और मानवीयता का प्रतीक। वे विभाजन के 'शिकार' हैं, लेकिन घृणा नहीं रखते।

रक्खे पहलवान : लालच और पछतावे का प्रतीक। उसका अपराधबोध कहानी का नैतिक केंद्र है।

अन्य : बच्ची, स्त्रियाँ – नई पीढ़ी में पैदा हुआ भय।

भाषा-शैली और कला-राकेश की भाषा सरल, संवाद-प्रधान और यथार्थवादी है। पंजाबी महावरे (चिज्जी, वारी जाऊँ) स्थानीय रंग देते हैं। वर्णनात्मक शैली दृश्यों को जीवंत बनाती है।

अन्य विभाजन-साहित्य से तुलना-भीष्म साहनी की 'तमस' में सामहिक हिंसा है, जबकि राकेश व्यक्तिगत विश्वासघात पर जोर देते हैं। कृष्णा सोबती की कहानियों में स्मृति प्रमुख है – राकेश भी इसी पर बल देते हैं।

समकालीन प्रासंगिकता-आज भी साम्प्रदायिकता, सीमा-विवाद और घृणा-भाषा मौजूद हैं। कहानी हमें सिखाती है कि विभाजन का दर्द आज भी जीवित है।

उपसंहार-'मलबे का मालिक' विभाजन के दर्द को 'मलबे' के रूप में अमर कर देती है। राकेश कहते हैं कि राजनीति ने मानवता को कुचला, लेकिन क्षमा और विवेक अभी बाकी है। यह कहानी हमें बार-बार याद दिलाती है – "विभाजन से क्या मिला?"

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. राकेश मोहन, 'मलबे का मालिक' (हिन्दवी/गद्यकोश संस्करण)।
2. दुबे रीता, 'मोहन राकेश की 'मलबे का मालिक': पुनर्पाठ' अपनी माटी, 2014।
3. हिन्दीकृज समीक्षा (2024)।
4. विकिपीडिया एवं अन्य स्रोत (मोहन राकेश जीवनी)।
5. सेंट तरुण के. *Witnessing Partition* (संदर्भित)।